मूल्यः एक प्रति 20 रूपये
वार्षिक 200 रूपये

FAI
ENSURING FOOD SECURITY

वर्ष - 54 अंक - 9

खाद पत्रिका

दि फर्टिलाइजर एसोसिएशन ऑफ इण्डिया की मासिक पत्रिका

ISSN 0023-1010 सितम्बर 2013

रबी विशेषांक

उन्नत तकनीक से गेहूँ का भरपूर उत्पादन

अरविन्द सिंह तेतरवाल* – राकेश चौधरी – मनोज कुमार जाट
कृषि विज्ञान केन्द (काजरी), कुकमा, भुज, (गुजरात)–370105*
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविघालय, हिंसार (हरियाणा)–125004

गेहूँ अनाजों की महत्वपूर्ण फसल मानी जाती है। भारत में धान के बाद गेहूँ का खाने वाले अनाजों में दूसरा स्थान आता है। यह देश के उत्तरी ओर मध्य भाग के निवासियों का मुख्य आहार है। गेहूँ में प्रोटीन मात्रा 10–15 प्रतिशत पायी जाती है। इसमें नाइसिन तथा थायमिन नामक अमीनों अम्लों की मात्राऐं भी अधिक पायी जाती है। इसकी प्रोटीन में ग्लूटीन नामक अमीनों अम्ल अधिक होने के कारण गेहूँ का उपयोग डबल रोटी, मैदा, सूजी आदि उत्पाद बनाने में लिया जाता है। गेहूँ का चौकर, दलिया तथा इनका भूसा जानवरों को खिलाने के लिए उत्तम समझा गया है। गेहूँ के दलिए में अत्यधिक कार्बोहाइड्रेटस होते हैं। इसको पशुओं का अच्छा राशन अवयव समझा गया है। गेहूँ का ज्यादातर क्षेत्र मध्य एवम् पूर्वी मैदानी क्षेत्रों में है जो मुख्यतः पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, बिहार, उत्तरप्रदेश, राजस्थान तथा मध्यप्रदेश राज्यों में आता है। उत्पादन की दृष्टि से क्रमशः पंजाब व हरियाणा तथा उत्तरप्रदेश अग्रणी राज्यों में आते हैं।

1965 तक गेहूँ उत्पादन में बहुत धीमी प्रगति हुई। जिसके कारण देश को अपनी जरूरत को पूरा करने के लिए काफी मात्रा में गेहूँ का आयात करना पड़ा। हरित क्रांति, जिसे गेहूँ क्रांति भी कहा जा सकता है, की सफलता बौनी प्रजातियों के आयात एवम् तदन्तर सुधार कार्यक्रमों के कारण हुई। 1970 के दशक के शुरूआत तक हरित क्रांति का असर गेहूँ उत्पादन पर दिखाई पड़ने लगा था एवम् यह संभावना बढ़ने लगी थी कि देश गेहूँ उत्पादन में स्वावलंबी बन सकेगा। 1980 के दशक के आरंभ तक यह बात निश्चित हो चुकी थी कि देश में अन्न की कोई कमी नहीं थी और भंडार इतना हो चुका था कि किसी भी विभिषिका से निबटने के लिए अन्न का पर्याप्त भंडार उपलब्ध था। विगत् 40 वर्षों में देश ने गेहूँ उत्पादन में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है और भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा गेहूँ उत्पादक देश बन गया है। आज भारत में गेहूँ की खेती करीब 27 मिलियन हैक्टेयर में होती है और उत्पादन 94 मि. टन है। इस महत्वपूर्ण उपलब्धि का श्रेय किसानों के अथक परिश्रम, उचित तकनीक, कारगर कृषि नीति एवम् उसकी अनुपालना, खाद एवम् बीज की आपूर्ति, एवम् कृषि वैज्ञानिकों के अथक प्रयास को दिया जा सकता है। लेकिन फिर भी देश की बढ़ती हुई जनसंख्या एवं वर्तमान उत्पादन स्तर को ध्यान में रखते हुए मुख्य खाद्यान्न फसल गेहूँ का उन्नत तकनीक अपनाकर भरपूर उत्पादन लेना आवश्यक हो गया है ।

भारत में गेहूँ उत्पादन के प्रमुख क्षेत्र

क. उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र

भारत के कुल गेहूँ उत्पादक क्षेत्र का लगभग 35 प्रतिशत (10 मि.है.) उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र में आता है। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड एवम् जम्मू कश्मीर के मैदानी क्षेत्र इसके प्रमुख उत्पादक प्रदेश हैं। सतलुज–गंगा के मैदानी क्षेत्रों से गेहूँ के कुल उत्पादन का लगभग 40–45 प्रतिशत हिस्सा आता है। जल संसाधन की दृष्टि से यह क्षेत्र काफी धनी है। पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में प्रति हैक्टेयर औसत उपज 4.5 टन है।

ख. उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र

भारत में गेहूँ के कुल क्षेत्रफल का 30 प्रतिशत हिस्सा (9.5 मि.है.) पूर्वी मैदानी क्षेत्रों (पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल व असम) में आता है। यह क्षेत्र 30 प्रतिशत गेहूँ का उत्पादन करता है। जल संसाधन की दृष्टि से यह क्षेत्र भी काफी धनी है और गंगा एवम् उसकी अन्य सहायक नदियाँ इस क्षेत्र से होकर गुजरती हैं। किसानों की जोत छोटी है एवम् प्रति व्यक्ति आय कम है। इसके कारण किसानों द्वारा कम उर्वरक एवम् सिंचाई का प्रयोग किया जाता है। यही